अध्याय - 1

दिनेश नंदिनी डालमिया व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अध्याय - 1

दिनेश नंदिनी डालमिया व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1·1 जीवन वृत्त

1·1·1 जन्म तथा जन्मस्थान :-

श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमिया का जन्म 16 फरवरी 1922 में राजस्थान के उदयपुर नगर के चौरड़िया परिवार में हुआ ।

1·1·2 माता-पिता :-

श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमिया के मां का नाम श्रीमती हरक कुंवरि और पिता का नाम श्री श्यामसुन्दर लाल था । इनके जन्म के समय इनकी मां की आयु 16 वर्ष और पिता की आयु 18 वर्ष थी। इनके पिता उन दिनों कॉलेज में ही पढ़ रहे थे, एम·ए· करने के बाद उनकी नियुक्ति उदयपुर के एक स्थानिय महाविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक के रूप में हुई। दिनेश नंदिनी कि मां तो अधिक पढी-लिखी नहीं थी, लेकिन सुशिक्षित प्राध्यापक होने के कारण इनके पिता की स्वाभाविक इच्छा थी कि उनकी बेटी की शिक्षा भी सुव्यवस्थित हो।[1]

1·1·3 विवाह एवं संतान :-

श्रीमती दिनेश नंदिनी जी का विवाह सेठ रामकृष्ण डालमिया के साथ 1946 में सम्पन्न हुआ। उन दिनों सेठ रामकृष्ण डालमिया भारत के उच्चतम उद्योगपतियों में से एक थे, जो अपने देश के विभिन्न व्यापारिक आर्थिक और राजनैतिक गतिविधियों के प्रमुख आकर्षण केन्द्र थे। उस समय तक सेठ जी के पाँच विवाह हो चुके थे, आयु की दृष्टि से भी वे इनसे लगभग 22-23 वर्ष बड़े थे दोनों परिवारों की आर्थिक स्थिति में भी जमीन आसमान का अन्तर था - ऐसी स्थिति में अनेक दृष्टियों से यह एक अनमेल विवाह का उदाहरण था। अतः आरम्भ में

तो इनके पिताने इस विवाह का विरोध किया, क्योंकि उन दिनों सेठजी न केवल देशीय बल्कि अन्तर्देशीय ख्याति के उद्योगपति थे।

श्रीमती दिनेश नंदिनी के विवाह के सम्बन्ध में कहा जाता है कि उनके गद्यगीत संग्रह "शबनम" और "मौक्तिकमाल" को पढकर सेठ रामकृष्ण डालमिया बहुत प्रभावित हुए थे, और उन्होंने इनके पिता को बुलाकर इस विवाह का प्रस्ताव रखा था। यह विवाह मात्र दबाव के कारण ही नहीं हुआ। इसके कई कारण और भी है जिनमें से एक तो यह हैं कि, जिन दिनों इस विवाह की चर्चा चल रही थीं, और सेठजी को एक बार मनाकर देने के बाद भी सेठजी की ओर से आग्रहपूर्ण पत्रों के आने का क्रम जारी था, तभी उनकी मां आकस्मिक रूप से बहुत बीमार हो गई। डाक्टरों को कैंसन का संदेह था - बाद में वह संदेह सहीं नहीं निकला लेकिन उस समय तो पूरें परिवार का मनोबल बुरी तरह टूट गया था और बहन-भाइयों में सबसे बड़ी होने कारण तथा स्वभाव से अतिभावुक एवं संवेदनशील होने के कारण दिनेश नंदिनीजी के मन को सर्वाधिक चोट लगी। वह सहसा अपने आप को असुरक्षित और अकेला महसूस करने लगी। इस हताश मानसिक स्थिति ने सेठजी के विवाह-प्रस्ताव पर पुनर्विचार करने के लिए उनको विवश कर दिया।

इस विवाह का दूसरा कारण उनके मन का अति कौतुहल भाव भी था अर्थात् वह यह देखना और जानना चाहती थी कि इस पुरूष के व्यक्तित्व में ऐसा क्या हैं जो इसे बार-बार एक और विवाह करने के लिए प्रेरित करता हैं। वस्तुतः उनकी इस प्रवृत्ति को वह एक चुनौती के रूप में स्वीकार करना चाहती थी। उनकी इच्छा थी कि यह विवाह करके अपने पूरे प्रयत्न द्वारा सेठजी की इस विवाह-शृंखला को आगे बढने से रोकूँ - परिणामतः सेठजी ने इसके बाद और विवाह तो नहीं किया लेकिन यह मानने में इन्हे कोई संकोच नहीं है कि उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को ये उनकी मृत्यूपर्यन्त समझ नहीं पाई।

श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमिया की सात संतान हैं। इन सात में से तीन पुत्रों और दो पुत्रियों के विवाह हो चुके हैं। दो पुत्रियों का विवाह करना

अभी शेष है। तीनों पुत्र और पुत्र वधुएँ इनके साथ ही रहते हैं। इनके दो पौत्र और एक पौत्री भी है। इस तरह सितम्बर 1978 में सेठजी की मृत्यु के बाद, संकट के इन क्षणों में श्रीमती डालमिया ने बडे धैर्य और बुध्दिमानी से स्थिति को सँभाला। इन्होंने बच्चों के मनोबल को उंचा ऊठाकर उन्हें स्वयं ही अपने परिश्रम से कुछ व्यापार कार्य आरम्भ करने के लिए प्रेरित किया ।

1·1·4 शिक्षा :-

श्रीमती दिनेश नंदिनी का जब जन्म हुआ था तब उनके पिता कॉलेज में ही पढ़ रहे थे। एम·ए· करने के बाद उनकी नियुक्ति उदयपुर के एक स्थानीय महाविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक के रूप में हुई। सुशिक्षित प्राध्यापक होने के कारण इनके पिता की स्वाभाविक इच्छा थी कि उनकी बेटी की शिक्षा भी सुव्यवस्थित हो। उस युग में उनकी सामाजिक स्थिति कुछ इस प्रकार थी कि प्रायः लडकियों को स्कूल में पढ़ने के लिए नही भेजा जाता था, अतः इनकी भी दसवीं तक की शिक्षा अव्यवस्थित ही रही। आरम्भ में कुछ दिनों के लिए इन्हें स्कूल भी भेजा लेकिन अधिकांशतः इनकी पढ़ाई का प्रबन्ध घर पर ही किया गया। सन 1932 में जब इनके पिताकी नियुक्ति नागपुर के एक कॉलेज में हो गई तब इनका पूरा परिवार वही चला गया। वहा जाने के बाद इन्होंने वही मैट्रिक की परीक्षा पास की और फिर कॉलेज में प्रवेश लिया। इस तरह कॉलेज में चार साल अध्ययन करके इन्होंने बी·ए· पास किया और :हिन्दीः में एम·ए· प्राइवेट ही किया । उन्होंने "कमलेश" जी से कहा भी है कि " मेरा स्कूल तथा कॉलेज का जीवन कुछ नही के बराबर है। संभवतः इसीलिए मेरे भीतर आधुनिक सभ्यता के स्वच्छन्द वातावरण के संस्कार बिल्कुल नहीं, है।"[2]

1·1·5 साहित्य यात्रा :-

साहित्य यात्रज्ञ सम्बन्धी विचार करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि, श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमिया ने 13 वर्ष की आयु से ही गद्यगीतों की रचना आरम्भ कर दी थी। तब तक साहित्य-रचना सम्बन्धी कोई ज्ञान उन्हें नहीं था। वे कई बार अपने द्वारा लिखित गद्यगीतों को पढ़कर स्वयं ही सोच मे पड

जाती थी कि इतनी अलंकृत और काव्यात्मक भाषा में रचित ये कृतिया क्या मेरे द्वारा लिखी गई हैं?

इस प्रकार गीतधारा के प्रवाह की ओर संकेत करते हुए उन्होंने "चिन्तन" के गीत में कहा भी है -

"भाग्य की विडम्बना ने मुझे कवि बना दिया"[3]

उनकी इस नैसर्गिक प्रतिभा को उनके पिता समझ गए थे अतः वे समय-समय पर उपयुक्त मार्गदर्शन कर इन्हें सुन्दर से सुन्दरतर और अधिक से अधिक लिखने के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे। "चिन्तन" की भूमिका में राधाकृष्ण के प्रेमसम्बन्धी गद्यगीत लिखने के लिए पिता से मिलने वाली प्रेरणा की ओर संकोच करते हुए उन्होंने लिखा भी है कि -

"मेरे पिताजी के वर्षों के इस शुभाग्रह ने कि ब्रम्हवाचक राधा-कृष्ण-प्रेम की चिरप्राचीन फिर भी नित नवीन परम्परा को गद्यगीतो में संवारा जाए - उस प्रेरणा की द्रुत, किन्तु निःशब्द गति ने मेरी अक्रिय संवेदन-सृष्टि को सौरभ से भर दिया - स्वर में सांवरे का सम्यक शिव रूप, गूढ़ातिगूढ सौन्दर्य और सांस के झीने तारों में पिरोई हुई ये उदात्त प्रसाद रूप प्रेम-मणिया उन्हीं के उत्साह का प्रतीक है।"[4]

1·2 <u>व्यक्तित्व :-</u>

प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक अलग व्यक्तित्व होता है। व्यक्तित्व दो प्रकार का होता है - अंतरंग और बाहयरंग। वर्ण, नाक-नक्श तथा शरीर-प्रकृति से बहिरंग व्यक्तित्व बनता है तो स्वभाव आचार-विचार तथा रूचि-अरूचि से अंतरंग व्यक्तित्व की पहचान होती है।

अतः कहा जा सकता है कि व्यक्ति का स्वभाव, उसके आचार-विचार एवं उसकी रूचि-अरूचि से ही उसके व्यक्तित्व की पहचान होती है उसके सौदर्यादिसे उसमें और निखार तो आसकता हे, किन्तु विकास नहीं हो सकता।

1·2·1 स्वभाव विशेष :-

श्रीमती डालमिया की विभिन्न रूचियाँ उनके व्यक्तित्व की दीप्त वर्तिकाएँ है। उनके माथेपर एक बड़ी सी गोल बिन्दी, मांग मे सिन्दूर और हाथो में साडी से मेल खाती हुई ढेर सारी चूडियां पहने उनका श्यामलवर्णी किन्तु आकर्षक एवं सौम्य, व्यक्तित्व देखनेवाले को बरबस अपनी ओर खींचता है। उनके निवासस्थान को देखने से ऐसा लगता है - इस ऐश्वर्यमय वातावरण में रहने वाली इस सब वैभव की मालकिन निश्चय ही बहुत सौभाग्यशालिनी होगी क्योंकि लक्ष्मी और सरस्वती दोनों की समान कृपा तो नियम का अपवाद रूप ही होती है। लेकिन उनके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में पढ़ने से पता चलता है कि उनकी कोटी का यह अभिजत्य तो उनका ऊपर से ओढ़ा हुआ हैं, वरना उनका जन्म भी हमारी ही तरह एक सामान्य मध्यवर्गीय परिवार में हुआ और उनके व्यक्तित्व के मूल संस्कार भी उसके अनुरूप ही हैं।

स्नेहभावी स्वभाव के कारण वे हर एक व्यक्ति के साथ अपना मित्र रूप सम्बन्ध रखती है। इसलिए लेखिका के साथ-साथ उनके स्वभाव में मित्र रूप भी दिखाई देता है।

उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, बाल्यावस्था और प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा के सम्बन्ध में पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि वह एक मध्यवर्गीय परम्परा में जन्मी लडकी होने के कारण उनकी शिक्षा अव्यवस्थित रही। श्रीमती दिनेश नंदिनी की साहित्यिक रचना देखने के उपरान्त उनके व्यक्तित्व के निर्माण में, उनके जीवन में घटित विविध महत्वपूर्ण घटनाओं के प्रभाव का विश्लेषण करें तो ज्ञात होता है कि इस दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है - सेठजी से उनका विवाह - इनके जीवन का अधिकांश समय घर की चार दीवारी में व्यतीत होने के कारण इनके स्वभाव में संकोच एवं लज्जाशीलता बहुत है। सन 1937-38 में साहित्य-सम्मेलन के एक दो समारोहो में जाने के बाद वे कभी किसी साहित्यिक आयोजन में नही गई। उन्होंने इतनी कविताओं की रचना की है लेकिन कभी किसी जनसभा में जाकर उसे सम्बोन्धित नही किया और न ही कभी आकाशवाणी अथवा दूरदर्शन के माध्यम से अपनी रचनाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

वस्तुतः यही कारण है कि उनके साहित्य में वैयक्तिक अनुभूतियों का ही चित्रण अधिक हुआ है, सामाजिक का नही। इनका मन साहित्य रचना मे ही अधिक लगता था क्योंकि विवाहोपरान्त भी ये अपने को अकेला ही अनुभव करती थी। इनकी मनोस्थिति कुछ ऐसी बन गई थी कि बच्चे हो जाने के बाद भी वे अपने मन को बच्चो में भी नही उलझा सकीं। संभवतः बच्चो के लालन-पालन की ओर इन्हें अधिक ध्यान और समय देने की आवश्यकता भी नहीं रहीं क्योंकि उस काम के लिए घर में नौकर चाकरों की कोई कमी नहीं थी और दूसरी बात, ऐसे कामों में इनकी रूचि भी नहीं थीं। इसलिए इनका मन साहित्यरचना में ही अधिक लगता था - उसी में उन्हें जीवन की सार्थकता भी लगती थी एक बार "कमलेशजी" द्वारा इस सम्बन्ध में प्रश्न करने पर उन्होंने उत्तर दिया था कि "लिखना मेरे जीवन का अंग है क्योंकि जो कह नहीं सकती, उसे लिख देती हूँ। परिश्रम से लिखती नही जब लिखने की प्रेरणा होती है, लिखती हूँ। लिखने के बाद दिल हल्का हो जाता है। अपनी लिखी हुई चीज जब पढ़ती हूं तो कुछ समय के लिए बुरी से बुरी घटना भूल जाती हूँ। मैं इसी में अपनी सांत्वना देखती हूँ। लिखित कृतियाँ मुझे अपने बच्चो से भी अधिक अच्छी लगती है। मेरी कृतियों में कमिया है पर मुझे उनसे मोह बहुत है।"[5]

इनके साहित्य में सामाजिकता के अभाव का एक कारण यह भी है कि इनमें "अकेलेपन" की अनुभूति इस सीमा तक है कि अनेक लोगों के बीच में बैठे हुए भी वे अपने में डूबी रहती है, उनके व्यक्तित्व का यह विरोधाभास उनकी एक निजी विशिष्टता है।

दिनेश नंदिनी जी के स्वभाव की एक उल्लेखनीय विशिष्टता यह है कि वे "धर्म" की अपेक्षा "कर्म" को अधिक महत्व देती है। किसी भी प्रकार के सामाजिक और धार्मिक बन्धन उन्हें स्वीकार्य नही है। ईश्वर के अस्तित्व में पूर्ण आस्था होते हुए भी धार्मिक आडम्बरों और पूजा-पाठ में उनका विश्वास कभी नही रहा। इस तरह दिनेश नंदिनी के व्यक्तित्व का एक अविश्वसनीय -सा प्रतीत होने वाला सत्य यह है कि इतने वैभव एवं ऐश्वर्य से भरे घर में विवाह होकर भी वह उससे

समरस नहीं हो पाई। अपने ही घर में वह आपने को सबसे अलग और अकेला महसूस करती है। किसी साहित्यिक-प्रेमी से बात करके उन्हें जो आत्मीक प्रसन्नता मिलती है, वह धन-सम्बन्धी चर्चा में नहीं।

इसप्रकार श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमिया बचपन से ही अति भावुक एवं संवेदनशील रहे है, इस कारण इनके स्वभाव में संकोच एवं लज्जाशीलता बहुत है और यही भाव उनकी साहित्यिक रचना में दिखायी देते है।

1·2·2 साहित्यिक व्यक्तित्व :-

वस्तुतः यह विवाद व्यर्थ का है। साहित्य की सृष्टि करने वाला साहित्यकार ही तो होता है, और वह समाज का प्राणी होता है। उसकी आवश्यकता समाज की आवश्यकता है, और समाज की आवश्यकता उसकी आवश्यकता है। किन्तु अपने ज्ञान, अनुभव और संस्कारों द्वारा वह अपने विचारों और निषयों को समाज के सामने रखता है।"[6] श्रीमती डालमियाजी व्यक्तिगत ही लिखती है और उसी को जग की अभिव्यक्ति समझती है। उनके निरन्तर कुछ न कुछ लिखते रहने की प्रवृत्ति का एक अन्य कारण यह भी है कि उन्हें अपने जीवन में सुख की अपेक्षा दुःख के क्षणों की अनुभूति अधिक हुई हैं और यही उनकी प्रेरणा का मूल है।

साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में दिनेश नंदिनीजी अपने पिता के प्रति विशेष आभारी हैं। इनकी सर्वप्रथम गद्यगीत रचना थी - "निराश आशा" जो इन्होंने मात्र 13 वर्ष की आयु में ही, किसी घटना प्रसंग से हताश होने पर बड़े भावावेश के क्षणों में लिखी थी। यह रचना उन्होंने सबसे पहले अपने घर पढ़ाने के लिए आने वाले मास्टरजी को जब दिखाई तो उन्होंने उसकी प्रशंसा की और आगे नियमित रूप से लिखते रहने के लिए प्रोत्साहित भी किया। उनका यही गद्यगीत बाद में सन 1932 में "त्याग भूमि" पत्रिका में प्रकाशित हुआ। "त्यागभूमि" के तत्कालीन सम्पादक श्री रामनाथ "सुमन" ने भी इस रचना की बड़ी सराहना की और उन्हें निरन्तर ऐसी रचनाएं लिखकर प्रकाशनार्थ भेजने रहने के लिए कहा। इन सब घटनाओं से इनके मनोबल को बहुत शक्ति मिली और त्यागभूमि, सुधा, माधुरी एवं चांद

आदि तद्युगीन प्रतिष्ठित पत्रिकाओं मे इनकी रचनाएं नियमित रूप से प्रकाशित होने लगी।

उन्हीं दिनों इन्दौर में एक साहित्य सम्मेलन हुआ जिसमें श्री शांतिप्रिय दिवेदी ने गद्यकाव्य-धारा के प्रतिनिधी रचनाकार के रूप में दिनेश नंदिनी को निमंत्रित किया। वहां इनकी भेट श्रीमती महादेवी वर्मा और श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान से हुई। महादेवी जी ने इनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर उन्हें अपनी सभी रचनाएं उनके पास इलाहाबाद भेजने के लिए कहा ताकि वे उनहें प्रकाशित कर सकें। महादेवीजी के सौजन्य सेही इनका प्रथम गद्यगीत-संग्रह सन 1937 में इलाहाबाद के साहित्य भवन द्वारा "शबनम" के नाम से प्रकाशित हुआ। "शबनम" उस युग की एक बहुचर्चित कृति रही है क्योंकि अपने समय में असामान्य काव्यात्मक एवं अलंकृत शैली में लिखी गई यह एक भावपूर्ण संवेदनात्मक रचना थी। इसकी दूसरी विशिष्टता यह थी कि यह एक महिला साहित्यकार द्वारा लिखी गई थी जब कि उन दिनों इस क्षेत्र में उनकी संख्या बहुत कम हुआ करती थी।

इसतरह स्पष्ट है कि श्रीमती दिनेश नंदिनी अपने साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में अपने पिता के प्रति विशेष आभारी है। उन्होने इतनी कविताओं की रचना की है लेकिन कभी किसी कवि सम्मेलन में कविता पाठ नहीं किया। वस्तुतः यही कारण है कि उनके साहित्य में वैयक्तिक अनुभूतियों का ही चित्रण अधिक हुआ हे, सामाजिक का नहीं।[7]

1·2·3 <u>सम्पर्क</u> :-

कोई भी सन्मानीय साहित्यकार हो उनके व्यक्तित्व का अभ्यास करते समय हम उनका जन्म से लेकर उनके साहित्य जीवन की सभी ओर दृष्टी फेर लेते है। और उसमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमे ऐसा प्रतीत होता है कि इतने साहित्यकार के सबन्धी हम शोध कर रहे है तो उनका बडे बडे सन्मानीय व्यक्ति के साथ जरूर सम्पर्क आया होगा।

ऐसा ही श्रीमती नंदिनी डालमियाजी के सर्वाधिक श्रध्देय व्यक्तियों की चर्चा करते समय उन्होंने अपने लेखन साहित्य में बताया है कि साहित्यकारो में से महादेवीजी के प्रति उनकी विशेष श्रध्दा रही है, उनके साथ उनका साहित्यिक जीवन के प्रथमावस्था से ही हमेशा सम्पर्क रहा है। श्रीमती महादेवी वर्माजी ने ही सन 1937 में "साहित्य-सम्मेलन" प्रयाग से इनकी "शबनम" गद्यगीत संग्रह को प्रकाशित करवाकर न केवल इन्हे और अधिक लिखने के लिए प्रोत्साहित ही किया बल्कि हिन्दी साहित्यजगत में एक गद्यगीत लेखिका के रूप में इन्हें प्रतिष्ठित भी किया।

महादेवीजी के अतिरिक्त वे अपने युग के महान नेताओं में से पं॰जवाहरलाल नेहरूजी से विशेष प्रभावित थे। जिन दिनो दिनेश नंदिनीजी कॉलेज में पढ़ती थी, उन दिनों देश में स्वतन्त्रता-आन्दोलन अपनी चरमसीमा पर था, और युवा वर्ग में अपने देश के लिए कुछ कर पाने का उत्साह जोरों पर था, अपने-अपने आदर्शों के अनुरूप सब विद्यार्थियोने किसी न किसी नेता को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। इसी भावना से प्रभावित और प्रेरित होकर श्रीमती दिनेश नंदिनीजी ने पंडित नेहरू को अपना आदर्श बनाया और आनन्दभवन इलाहाबाद के पते पर उनके साथ पत्रव्यवहार करना शुरू किया, उनके साथ रहकर देशसेवा करने का अवसर प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की। इस तरह पं॰नेहरूजी ने श्रीमती डालमिया जी से उनके मन की एकाग्रता के लिए चरखे पर सूत कातने की सलाह दी। इसी बीच श्रीमती डालमिया ने अपने कुछ अप्रकाशित गद्यगीत संग्रह पं॰नेहरूजी से दिखाऐ और उन्हें पसंद आने पर यह संकलन उन्ही को समर्पित करने की इच्छा व्यक्त की, और बाद में यह संकलन "दुपहरिया के फूल" नाम से प्रकाशित हुआ।

इसके बाद श्रीमती डालमिया का सेठजी के साथ विवाह हो गया, उसके बाद ही पत्राचार का क्रम सदा-सदा के लिए टूट गया। क्योंकि देश के स्वाधीन होने के बाद राजनैतिक सिध्दान्तों की दृष्टि से नेहरूजी की विचारधारा सेठजी से मेल नहीं खाती थी। अतः ऐसी स्थिती में उनकी पत्नी से भी किसी प्रकार का सम्बन्ध रखना उन्हें उचित नहीं हुआ होगा। इस तरह श्रीमती दिनेश नंदिनीजी

के अपने साहित्यिक जीवन में अनेक सन्मानीय व्यक्तियों के साथ सम्पर्क आ गये।

1·2·4 सम्मान :-

श्रीमती डालमियाजी को अपनी साहित्य-सेवा के लिए पर्याप्त सम्मान प्राप्त हुआ है। एक संकलन के रूप में साहित्य-जगत् को उनकी प्रथम भेट थी - "शबनम"। इसका प्रकाशन सन् 1937 में "साहित्य सम्मेलन प्रयाग" द्वारा हुआ। उसी वर्ष "हिन्दी साहित्य सम्मेलन" की ओर से इस कृति को उस वर्ष की सर्वश्रेष्ठ कृति घोषित कर उसे "सेकसारिया पुरस्कार" प्रदान किया गया। इसतरह उनके अनेक कविता संग्रह प्रकाशित हो गये है।

"मुझे माफ करना" उपन्यास को उत्तर प्रदेश का "प्रेमचन्द पुरस्कार" मिला। "फूलों का कुर्ता" टी·वी· के लिए स्वीकृत है। इसतरह "हिन्दी साहित्यजगत" में इनकी लोकप्रियता और भी बढ़ गई।

1·2·5 जीवन की ओर दृष्टिपात :-

जीवन में हर समय किसी न किसी के अर्थात् किसी सुहृदय के सहवास की इच्छा होती है। कई बार परेशान होना पडता है। कभी-कभी तो अपने विगत जीवन पर दृष्टिपात करते हैं तो बहुत निराशा होती है, कोई भी दावे के साथ नहीं कह सकता कि मैने जो भी कुछ चाहा मुझे मिला है या मैंने प्राप्त किया हैं। उस तरह श्रीमती डालमिया भी अपने जीवन की ओर दृष्टि फेर लेती है तो बहुत निराश हो जाती है।

केवल अपने कार्य में याने साहित्यकार के रूप में सफल होना ही साहित्यकार के जीवन की सम्पूर्ण उपलब्धि नहीं है। पारिवारिक सुख के बिना जीवन अधूरा ही रह जाता है। इस पारिवारिक सुख की दृष्टि से श्रीमती दिनेश नंदिनी हमेशा निराश ही रहीं। इतने वैभव एवं ऐश्वर्य से भरें घर में विवाह होने के कई वर्षो बाद भी वे उससे समरस नहीं हो पाई। उस घर और वातावरण के साथ उनका अपनत्व आज भी जूड नहीं पाया - अपने ही घर में वह अपने को सबसे अलग, अकेला महसूस करती रहीं। किसी साहित्य-प्रेमी से बात करके उन्हें जो आत्मीक

प्रसन्नता मिलती है, वह धन-सम्बन्धी चर्चा में नहीं। इसतरह जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि होती है उचित जीवनसाथी की प्राप्ती। इस दृष्टि से देखा जाय तो लगता है कि श्रीमती डालमियाजी और उनके पति मे मौलिक मतभेद हमेशा रहें, उनका जीवन हमेशा एकाकी ही रहा।

इसतरह उन्होंने जैसे अपने जीवन का निचोड ही प्रस्तुत कर दिया है, वे लिखती हैं, "मैं उम्र में डूबने के साथ ही बडी एकाकी होती जा रही हूं। शायद कहीं मैं अपने यश में जवानी तो नही ढूँढ रही ? बुढ़ापे को कहा तक धकेला जा सकता है। वह अनियंत्रित पास और पास सरकता आ रहा है ..... जिसने जीवन को पूरी तरह जीया न हों, वहीं इससे भय खाता हैं। मेरी यहीं कहानी है - मैं जिन्दगी से आमना-सामना कभी न कर सकीं, हमेशा सत्य अर्थात यथार्थ से कतराती रही और अब भी उसका सामना करने से घबराती हूँ - इसीलिए विचारों में अपूर्णता रहीं, कामों में अधूरापन रहा और जिधर देखती हूँ, उधर ही अभावों का अम्बार लगा दीखता है - मुझे सम्पन्नता में भी विपन्नता के ही दर्शन होते हैं, जीवन में भी मृत्यु की पदचाप ही सुनती हूँ, मुस्कान में भी पहले अश्रुओं की खोज करती हूं और करती रही हूँ।"[8]

इसतरह श्रीमती डालमिया का श्यामल वर्णी किन्तु आकर्षक एवं सौम्य व्यक्तित्व देखनेवाले को उनकी ओर आकर्षित करता है। लेकिन उनका व्यक्तित्व अविश्वसनीय प्रतीत होने वाला है। क्योंकि मैंने इनके व्यक्तित्व के बारे में जब भी जानने की कोशिश की, तो ऐसा दिखायी दिया कि उन्हें पारिवारिक सुख की अपेक्षा साहित्य-साधना में जुटी रहना अधिक अच्छा लगता है। और दिनेश नंदिनी जी के व्यक्तित्व का एक अविश्वसनीय-सा प्रतीत होने वाला सत्य यह है कि इतने वर्षो बाद भी वे उससे समरस नहीं हो पाई हैं। स्पष्ट है कि वे अपनी साहित्यिक रचनाओं को ही अपने जीवन की सबसे बडी उपलब्धि समझती हैं।

1·3 कृतित्व :-

दिनेश नंदिनी डालमिया हिन्दी साहित्य का एक सुप्रसिध्द नाम हैं। दिनेश नंदिनीजी साहित्य में कविता को ऐसा कर्म मानती है, जो पीडा उपजाता है, क्योंकि वह मर्माहत मानव की पीडा से सीधा साक्षात्कार कराता हैं। श्रीमती डालमिया के बहु आयामी कृतित्व का प्रसार वर्तमान शती के पूर्वार्ध तक व्याप्त है। काफी समय तक उनका नाम हिन्दी लेखिकाओं में महादेवी वर्मा के बाद लिया जाता था, और गद्य काव्य के क्षेत्र में राय कृष्णदास, वियोगी हरि आदि प्रसिध्द लेखकों के वर्ग में, अपनी नारी-सुलभ कोमल अनुभूति और सरस काव्यमयी अभिव्यक्ति के द्वारा दिनेश नंदिनी डालमिया ने अपनी अलग पहचान बना ली थी।

कालान्तर में गद्य काव्य की विधा पृष्ठभूमि में पड गई और उसके साथ दिनेश नंदिनीजी का नाम भी। किन्तु उनकी रचना-प्रक्रिया समाप्त नहीं हुई। यह क्रम अब भी चल रहा है और अभी पिछले वर्ष उनका कविता संग्रह "हिरण्यगर्भा" प्रकाशित हुआ है। इस दीर्घ अन्तराल में श्रीमती डालमिया की लेखनी कथा-साहित्य और कविता के क्षेत्रों में निरन्तर सक्रिय रहीं और अब तक इनके क्रमशः छह उपन्यास तथा इतने ही काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चुके है। उपन्यास प्रायः सभी आत्मकथात्मक है - जिनमें "नारीमन का अन्तर्द्वन्द" तो प्रमुख है ही, किन्तु उसके साथ एक विशेष वर्ग के जीवन - परिवेश का भी अत्यन्त प्रामाणिक और प्रभावी चित्रण किया गया है। इन रचनाओं मे अपनी समृध्द काव्यमयी भाषा शैली के द्वारा लेखिका ने नारी जीवन की अन्तर्व्यथा को ही नही, परिवेश के विभिन्न चित्रों को भी अत्यन्त मार्मिक रूप प्रदान कर दिया है। इसतरह स्पष्ट है कि श्रीमती डालमिया ऐसी ही लेखिका है जिन्होंने गद्यगीत संग्रह, कविता संग्रह, उपन्यास, कहानी संग्रह और अन्य कई विधाओं में लिखा है, और अपनी पहचान बनाई हैं।

गद्यगीत संग्रह :

1·	शबनम	(1937)
2·	मौक्तिकमाल	(1938)
3·	शारदीया	(1939)

4·	दुपहरिया के फूल	§1944§
5·	वंशीरव	§1945§
6·	उनमन	§1945§
7·	स्पन्दन	§1947§
8·	चिन्तन	§1959§
9·	शर्वरी	§1962§

कविता संग्रह :

1·	उरवाती	§1937§
2·	इति	§1937§
3·	जागती हुई रात	§1937§
4·	मनुहार	§1947§
5·	सारंग	§1948§
6·	प्रतिछाया	§1951§
7·	हिरण्यगर्भा	§1991§

उपन्यास :

1·	मुझे माफ करना	§1980§
2·	आहो कंी बैसाखियाँ	§1982§
3·	कंदील का धुआ	§1982§
4·	और सूरज डूब गया	§1983§
5·	फूल का दर्द	§1985§
6·	आँख मिचौली	§1985§

कहानी संग्रह :

1·	चूडी चटक गई।	

1·3·1 श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमिया के गद्यगीत :-

हिन्दी के गद्यगीतकारों में दिनेश नंदिनीजी का नाम सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। लेखिका के समस्त गद्यगीत-कृतियों को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन में सतत परिवर्तनशील परिस्थितियों ओर परिवर्द्धनशील अवस्था के साथ-साथ उनकी रचनाओं की आधारभूमि में भी निरंतर परिवर्तन होता रहा है। परिणामतः उनकी कृतियों में विषयगत मूल अनुभूतियों की दृष्टि से बहुत विविधता आ गई है। अतः उन्हें कुछ निश्चित वर्गों में आबध्द कर पाना बहुत कठिन है, लेकिन फिर भी, अध्ययन की सुविधा के लिए हम उनके गद्य-गीतों को स्थूल रूप से छः वर्गों में विभक्त कर सकते हैं -

1· लौकिक प्रेम सम्बन्धी
2· रहस्यवादी
3· भक्तिपरक
4· दार्शनिक
5· प्रकृति - प्रेम सम्बन्धी
6· विविध विषयों के सम्बन्धित ।

1· लौकिक प्रेम - सम्बन्धी गद्यगीत :-

दिनेश नंदिनीजी के अधिकांश गद्यगीत लौकिक प्रेम से सम्बन्धित है, जिसका कारण यह है कि वे संसार के सभी सम्बन्धों का मूलाधार प्रियतम और प्रेमी के सम्बन्ध को ही मानती हैं। उनके अनुसार "संसार में प्रिय और प्रियतम के अतिरिक्त भी कोई सम्बन्ध है, इसकी अनुभूति मुझे नहीं हो पाती, यही कारण है कि उनके अध्यात्मिक प्रेम का आधार भी लौकिक प्रेम ही है।"

इनकें गद्यगीतों में प्रिय के सौन्दर्यमय रूप के भी अनेक चित्र मिलते हैं। उनका प्रियतम इतना सुन्दर और आकर्षक है कि प्रकृति के सभी सुन्दर पदार्थ उसके सामने फीके जान पडते है। वस्तुतः इनके लौकिक प्रेम प्रधान गीतों में संयोग के बहुत ही मनोरम एवं आकर्षक चित्र मिलते हैं लेकिन प्रायः सभी सांकेतिक है, स्पष्ट नहीं। फिर भी लेखिका ने संयोग की अपेक्षा वियोग को ही अधिक महत्वपूर्ण

माना है इसके उदाहरण उनके "शर्वरी", "शारदीया", "स्पन्दन" आदि गद्यगीत संग्रह के पंक्तियों में दिखायी देते हैं।

प्रिय की अनुपस्थिति में वे अनेक आशंकाओं से ग्रस्त होकर आहें भरतें हुए उसकी "सतत प्रतीक्षा में रत हैं।" फिर भी "मनुहार" के बाद भी प्रिय-मिलन की काई क्षीण रेखा नजर न आने पर वें निराशा की उस चरम सीमा पर जा पहुंचती हैं, जहां उनकी प्रिय से मिलनाशा और आकांक्षा - दोनों ही समाप्त हो जाती हैं -

उपर्युक्त उध्दरणों से स्पष्ट है कि दिनेश नंदिनी जब तक एक बार किसी के प्रेम मे डूबकर अपने जीवन को जी नही लेती, तब तक अपना जीवन सफल नहीं मानती। उनकी यह कामना ही इस तथ्य का एक सशक्त प्रमाण है कि उनके जीवन में प्रेम की लालसा कितनी सघन ओर तीव्र है।

वस्तुतः सत्य तो यह है कि उनके गद्य गीतों की रचना की मूल प्रेरणा भी यहीं है और उनमें परिव्याप्त मूल भावना भी यही है। उनके समस्त गद्य गीतों का गम्भीरता से अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि, "वंशीरव" से पहले रचित गद्य गीत संकलनों में प्रिय के असीम सौन्दर्य उससे मिलने की उत्कंठा, उसकी प्रतीक्षा और मिलन के क्षणों की मधुर कल्पनाओं के चित्र ही अधिक है, लेकिन बाद की रचनाएं उनकी प्रेमगत निराशा अतृप्ति और प्रिय के प्रति विविध प्रकार की शिकायतों, से ही आपूर्ण हैं। उनकी अन्तिम रचना "शर्वरी" तक पहुंचते - पहुंचते उनमें कुछ ठहराव आ गया है, लेकिन कई गीतों में उनकी प्रेमगत अतृप्ति के अनेक संकेत विद्यमान है।[9]

2. <u>रहस्योन्मुख गद्यगीत</u> :-

श्रीमती दिनेश नंदिनीजी ने अनेक रहस्योन्मुख गद्यगीतों की भी रचना की है। यद्यपि उन्होंने लौकिक प्रेम-प्रधान गद्यगीतों की पर्याप्त संख्या में रचना की है किन्तु वह उनका लक्ष्य नहीं था - वह उससे प्रेरणा प्राप्त करना चाहती थीं। जिसका संकेत निम्नलिखित पंक्तियों से मिलता हैं -

"उससे मिलने जाना हैं ,
फिर हमने माया के इस लाक्षागृह को अपना
आदि और अंत क्यो मान लियाहै?"

इस तरह स्पष्ट है कि पार्थिव प्रेम और सौन्दर्य में उलझी हुई लेखिका को प्राकृतिक सौन्दर्य के माध्यम से अलौकिक प्रियतम की एक झलक ने ही लौकिकता से विमुख कर अलौकिकता की ओर उन्मुख कर दिया और वह आलौकिक प्रियतम की अनन्त खोज में निकल पडी। इस प्रकार अब उनका आराध्य एक पार्थिव प्राणी न रहकर अलौकिक सत्ता हो जाता है। उस अलौकिक प्रिय के प्रति अपनी भावनाओं के समर्पण हेतु ही उन्होंने रहस्योन्मुख गीतों की रचना की हैं -

अलौकिक परमसत्ता के प्रति उन्होंने अपनी हार्दिक भावनाओं का समर्पण जिन गीतों में किया है वे सब रहस्य परक हैं। इस प्रकार आत्मा को परमात्मा का ही एक अंश माननेवाला "अद्वैतवाद" इस रहस्यवाद का मूलाधार है।

रहस्यवाद की सृष्टि तीन भावनाओं के सम्मिश्रण से होती है - विस्मय, जिज्ञासा और रीति। सांसारिक प्राकृतिक पदार्थो के आश्चर्यपूर्ण रूप और कार्यो को देखकर मन में "विस्मय" जाग्रत होता है। उसके निर्माता और नियंत्रक को जानने की इच्छा ही "जिज्ञासा" है और उस अलौकिक परम-शक्ति से सम्पर्क करने की इच्छा है "रीति"। इन विभिन्न तीन भावनाओं के समानान्तर ही रहस्यवादी की तीन अवस्थाएं है - 1· जिज्ञासा प्रधान ।
2· प्रेम प्रधान ।
तथा 3· मिलन के अलौकित आनंद की स्थिति।[10]

इस तीसरी अवस्था का प्राप्त होना ही रहस्यवादी का चरम लक्ष्य है।

रहस्यवाद सम्बन्धी उपर्युक्त सभी तत्व दिनेश नंदिनीजी के गीतों में मिलते है। विस्मय, जिज्ञासा और रीति की अभिलाषा को व्यक्त करने वाले उदाहरण उनके "शबनम" गद्यगीत संग्रह में अनेक दिखायी देते है। उसका सर्वप्रथम गीत है-

"तू है सच्चा तो आकिल क्यों बताते हो सारे जहाँ को झूठा?
तू है निराकार तो शक्ल और सूरत, रंग और रूप भी -
नुमायश क्या है ?
जब तू ही तू है व्याप्त आखिल ब्रम्हांड में तो फिर माया-
क्या है ?
तू ही है अजर, अमर, अनन्त तो बता देश और काल, जरा
और मृत्यु के चित्रपट क्या है ?"[11]

यहां परम सत्ता और प्रस्तुत दृश्यमान जगत के स्वरूप के सम्बन्ध में विस्मय और जिज्ञासा के भाव व्यक्त किए गए हैं। इसतरह "शबनम" के अन्य गीतों में भी यही भाव व्यंजित है।

"शारदीया" के एक गीत में उस परमसत्ता के निवासस्थान के विषय में जिज्ञासा व्यक्त की कई है। और "चिन्तन" के एक गीत में कतिपय प्राकृतिक रहस्यों को जानने की उत्कट लालसा उनके मन में अभिव्यंजित हैं।

विस्मय और जिज्ञासा के उपरांत उस "असीम" के प्रति मन में रति भाव जाग्रत हो जाने पर उसे अपना प्रिय बनाकर उससे मिलने के लिए जीवात्मा उसकी खोज में भटकने लगता है। यहां पर श्रीमती डालमियाजी ने उस अलौकिक प्रियतम से न केवल मिलन की तीव्र लालसा ही व्यक्त की है, बल्कि एक बार मिल जाने पर फिर मिलन को अमर बना लेने की उत्कट चाह भी व्यक्त की हैं।

इसप्रकार श्रीमती दिनेश नंदिनीजी के रहस्यवाद पर अद्वैतवाद और सूफीमत का विशेष प्रभाव हैं। आत्मा और परमात्मा की इस अभिन्न स्थिति को प्राप्त होना ही रहस्यवादी का उद्देश्य है। अतः यहां आकर उन्हें अपने चरम लक्ष्य की प्राप्ति हो जाती है।

3. <u>भक्तिपरक गद्यगीत</u> :-

श्रीमती दिनेश नंदिनी ने अनेक भक्तिपरक गीतों की भी रचना की है जिनमें उन्होंने भगवान के प्रति अपनी भक्तिपूर्ण भावनाओं का समर्पण किया है। इनके रहस्यपरक गीतों में जहां अलक्षित परमसत्ता के साथ आत्मा के एकाकार

हो जाने को ही परम लक्ष्य माना गया वहां इन भक्तिपरक गीतों में भगवान का कृपापात्र बनकर उसके सान्निध्य को प्राप्त करना ही इनका उद्देश्य हैं।

दिनेश नंदिनीजी की भक्ति-भावना उनके लौकिक प्रेम का ही उन्नयित रूप है, अतः इस प्रकार में उनका आराध्य "भगवान" वही हैं जो उनके लौकिक प्रेम में "प्रिय" था। वे अपने प्रिय को भगवानरूप ही मानती थी। यही कारण है कि अपने "प्रिय" से अलग भगवान के स्वरूप की विवेचना उन्होंने अपने गद्यगीतों में कही नहीं की।

"दिनेश नंदिनी की प्रीति-भावना प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर बहने के कारण उनके काव्य में हमें उस आराध्य का चित्र मिलता है जो संसार की उन सभी सुन्दरताओं से विभूषित है, जिन्हें इन्द्रियां अपने रस का साधन समझती हैं। उसका रूप सर्वथा पार्थिव है और उसके मिलन द्वारा प्राप्त आनंद सर्वथा दिव्य हैं। इसीलिए उसमें प्रेम-जीवन के मान, रूप-गर्व, यौवनोल्लास, चेष्टा, हाव-विभाव, संकेत-स्थल, रास और परिरम्भण की मधुर इन्द्रिय-क्रियाएं है।"

भगवान के रूपांकन के अतिरिक्त उसकी करूणामयता, भक्त-वत्सलता, आडम्बरहीन प्रेम की इच्छा और दीन बंधुत्व आदि अनेक गुणों की चर्चा भी भक्तिपरक रचनाओं में की जाती है। दिनेश नंदिनी ने अपने गद्य गीतों में भगवान के इन गुणों की ओर संकेत किया है और कहा है -

परमेश्वर के निकट सभ्यता, सौन्दर्य और शब्दों की मिठास का मूल्य नहीं - वह शुष्क हृदय में कल्यापकारी सुरसरि बन कर बहता है।

दिनेश नंदिनी की भक्ति भावना का रूप उन गद्यगीतों में दिखाई देता है जिनमें उन्होंने इस संसार में आगामी संभावित समस्याओं और विपदाओं की कल्पना कर उन्हें दूर करने के लिए भगवान की कृपा-याचना की है। यह प्रार्थना केवल इसलिए की थी क्योंकि उन्हें गीता में अर्जुन को भगवान कृष्ण द्वारा दिए गए वचन में पूर्ण विश्वास था। लेकिन वर्तमान कलियुग में व्यक्ति और समाज की इतनी दुर्दशा और पतन के होते हुए भी जब उन्हें उसका उध्दारकर्ता भगवान का कोई अवतार

कहीं दिखाई नहीं दिया तब वे भगवान से अपनी प्रतिज्ञा-पूर्ति के लिए बल्कि अवतार के रूप में आने के लिए अपने गद्य गीतों में उपालम्भमयी याचना करती हैं।

इस तरह दिनेश नंदिनी की भक्ति भावना भगवान कृष्ण की ओर भी उन्मुख हुयी है, उन्हीं के चरणों में समर्पित हुई है। कही - कही भगवान रूद्र के प्रति भी उन्होंने अपना भक्तिभाव व्यक्त किया है। मुख्यतः भक्ति के क्षेत्र में उनके आराध्य भगवान कृष्ण ही थे - उनके प्रति अपनी भावनाओं का समर्पण प्रत्यक्ष रूप से भी किया है और राधा एवं अन्य गोपियों के माध्यम से भी ।

इस प्रकार "चिन्तन", "दुपहरिया के फूल", "मौक्तिकमाल ", "शबनम" आदि गद्य गीत संग्रह के कई गीतों में इनकी भक्तिभावना दिखायी देती है।

4· दार्शनिक गद्य गीत :-

इसमे संदेश नहीं कि श्रीमती दिनेश नंदिनी दर्शन की एक गहन अध्येता है - भारतीय अध्यात्म और दर्शन से उनका गहरा परिचय है। उनके शुध्द दार्शनिक गद्य गीत संख्या में कम है, लेकिन उनके प्रेममूलक, रहस्यवादी और भक्तिपरक गद्य गीतों के बीच बीच में अनायास आनेवाली विशिष्ट उक्तियों से उनकी दार्शनिक मान्यताओं का परिचय मिलता हैं। आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध, जगत् और माया के स्वरूप तथा जीवन, मृत्यु, जन्मान्तरवाद, निर्वाण, प्रलय और स्वर्ग आदि के सम्बन्ध में उनके विचार इस प्रकार है -

मूल रूप से उन्हे शंकर के अद्वैतवाद में आस्था हे जिसके अनुसार आत्मा और परमात्मा के बीच अंशांशी सम्बन्ध होने के कारण वे दोनो मूलतः अभिन्न है पर कभी - कभी इन दोनों के बीच इन्होंने उत्पाद्य-उत्पादक सम्बन्ध भी माना है जो कि शुध्दाद्वैत का प्रभाव है -

"तुम अग्नि हो तो मैं उससे प्रकट होने वाला स्फुलिंग
तुम दरिया हो तो मैं उसके बीच रमनेवाली मौज,
तुम दीपक हो तो मै उसकी लौं,
तुम चंदन हो तो मैं उसकी सुगंध ।"

यहा प्रथम और तृतीय वाक्य में जीव और ब्रहम के बीच उत्पाद्य-उत्पादक सम्बन्ध दिखाया गया है और द्वितीय और चतुर्थ वाक्य में उनके बीच अंशाशी सम्बन्ध बताया गया है।

अद्वैतवाद के अनुसार जीव ब्रहम का ही एक अंश है। सांसारिक मोह-माया के परदे के कारण वह अपने को ब्रहम से भिन्न मानता है लेकिन ज्ञान की प्राप्ति द्वारा वह माया के इस आवरण को हटा देता है तो ब्रहम से अपने सम्बन्ध के सत्य को जानकर साधना द्वारा उसके साथ एकाकार हो जाता है। अद्वैतवाद के इस सिध्दान्त को "उनमन" के एक गीत में बडे सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है -

"आत्मा ने आर्द्र को कहा -
अज्ञान ।
मैं अमर हूं -
अनंत हूं, ईश्वर हूं ।।"[12]

दिनेश नंदिनी के अनुसार जीवात्मा और परमात्मा के बीच भेद बने रहने का मूल कारण धार्मिक पाखंड और अंधविश्वास है - जगत के स्वरूप के सम्बन्ध में उनकी मान्यता है कि वह पूर्णतः ब्रहम परिव्याप्त है। कही-कहीं उनके गीतों में शंकराचार्य के "जगत मिथ्या" सिध्दान्त के अनुरूप संसार को माया रूप होने के कारण असत्य भी माना है।

जन्मान्तरवाद में उन्हें बहुत विश्वास है और उनके विचार से जीव केवल मुक्ति की खोज के लिए ही चौरासी लाख योनियों मे भटकता है। "दुपहरिया के फूल" गद्य गीत संग्रह के गीत में मुक्ति अथवा निर्वाण की प्राप्ति के लिए त्याग और विरक्ति भाव की आवश्यकता पर उन्होंने विशेष बल दिया है।

लेखिका की दार्शनिक प्रस्थापनाओं की उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि मूलतः भारतीय अध्यात्मक, भारतीय दर्शन और भारतीय परम्पराओं में ही उन्हें विश्वास है। अन्य दर्शनों में से केवल सूफी मत का उन पर विशेष प्रभाव है।

वस्तुतः जहा तक जीव और परमात्मा के अद्वैत का प्रश्न है, शंकराचार्य और सूफियों के अद्वैतवाद में कोई विशेष अन्तर नहीं है लेकिन जीव और ब्रहम की सिध्दि के साधन के सम्बन्ध में उनमें कुछ भिन्नता है - शंकर के अद्वैतवाद में ज्ञान पर अधिक बल दिया गया है जब कि सूफी मत में प्रेम की महत्ता के सामने ज्ञान को तुच्छ बताया गया है। दिनेश नंदिनीजी ने अनेक स्थलों पर ज्ञान की महत्ता को स्वीकार किया है। लेकिन इस ज्ञान की अपेक्षा प्रेम को वे अधिक महत्वपूर्ण मानती है -

इसप्रकार दिनेश नंदिनी के दार्शनिक गद्य-गीतों में प्रस्थापना की गई है कि जीव और ब्रहम मूलतः अभिन्न है, जगत् में सर्वत्र परमसत्ता व्याप्त है पर इसके साथ ही दूसरी ओर वे उसे माया रूप होने के कारण असत्य भी मानती है। जीवन को भी उन्होंने कही क्षणभंगुर माना है और कही अनन्त। ये असंगतियां वस्तुतः उनकी बदलती हुई विचारधारा की सूचक हैं। सृष्टि की उत्पात्ति प्रलय और स्वर्ग की कल्पना भी उन्होंने भारतीय दर्शन की परम्परा के अनुरूप ही की है पर सूफीमत से अत्याधिक प्रभावित होने के कारण उन्होंने अलौकिक प्रियतम की प्राप्ति की साधना में ज्ञान की अपेक्षा प्रेम और "इश्क की शराब" को बहुत महत्ता दी है। इस प्रकार इनकी दार्शनिक मान्यताएं अद्वैतवाद और सूफी मत - दोनों के सम्मिश्रित प्रभाव से निर्मित हुई हैं।

5. <u>प्रकृतिपरक गद्यगीत :-</u>

सौन्दर्य आगार होने कारण प्रकृति के प्रति जब साधारण मानव के मन में ही इतना नैसर्गिक आकर्षण रहता है तब अधिक भावुक और संवेदनशील होने के कारण गीतकारों का तो उससे शीघ्र ही प्रभावित हो जाना स्वाभाविक है हिन्दी के गद्य गीतों में प्रकृति का विविधरूपी अंकन किया गया है, लेकिन दिनेश नंदिनीजी के गीतों में प्रकृतिपरकता कम दिखायी देती है। इसका कारण यह है कि उनका अधिकांश जीवन पर्दे में बीता और प्राकृतिक सौन्दर्य के निरिक्षण का उन्हें बहुत कम अवसर मिला अतः वे उससे अधिक प्रभावित नहीं हो पाई। वस्तुतः सत्य तो यह है कि केवल स्वतन्त्र रूप में शुध्द प्रकृति-चित्रण के उदाहरण उनकी

कृतियों में बहुत कम है अन्यथा उद्दीपन, अलंकरण, और पृष्ठभूमी निर्माण उदाहरण उनके गद्य गीतों में है। उनके जीवन में प्रकृति का एक महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि इस लौकिक वासना-पंक से निकलकर, उस अलौकिक प्रियतम के प्रति अपनी उन्मुखताके लिए उन्होंने उसे ही प्रेरणा रूप माना हैं।

इस तरह दिनेश नंदिनीजी के गद्यगीतों में प्रकृति-चित्रण के निम्नलिखित विविध रूप मिलते है -

1· आलम्बन रूप ।

2· उद्दीपन रूप ।

3· अलंकरण - सामग्री के रूप ।

4· मानवीकरण के रूप ।

5· बिम्ब - प्रतिबिम्ब रूप ।

6· पृष्ठभूमि रूप में।

7· रहस्यात्मक रूप में ।[13]

प्रकृति के उपर्युक्त चित्रों को देखते हुए सहज ही यह निष्कर्ष दिया जा सकता है कि उनकी रचनाओं में प्रकृति उपेक्षित नहीं है। इनका प्रकृति चित्रण भावनापूर्ण, आकर्षक और मनोरम है।

गद्यगीतों के वर्ण्य विषय के लिए विविध विषयों का कोई प्रतिबन्ध नहीं है। संसार की किसी भी वस्तु और मनुष्य की किसी भी भावना को लेकर गद्यगीत की रचना की जा सकती है। दिनेश नंदिनीजी के गद्यगीत भी प्रेम सम्बन्धी रहस्यवादी और भक्तिपरक विषयों तक ही सीमित नही है, उन्होने और भी कई विषयों से सम्बन्धित गद्यगीतों की रचना की है। इनमें से कुछ सम्बन्ध आशा-निराशा मोह, तृष्णा, लज्जा और ईर्ष्या आदि मनोभावों से है, कुछ में साकी, मदिरा, प्याले का प्रशस्तिगान किया है, कही - कहीं नारी हृदय, मातृत्व, वात्सल्य, यौवन, मृत्यु आदि प्रसंगो को भी लिया गया है।

इसप्रकार विषय की दृष्टि से दिनेश नंदिनीजी के गद्यगीत, उनका आधार फलक बहुत विस्तृत हैं। तलवार और हंसिया जैसी अत्यन्त साधारण एवं स्थूल वस्तुओं से लेकर जीव और ब्रह्म के स्वरूप एवं पारस्परिक सम्बन्ध के सूक्ष्मतम प्रसंग तक उनका विषय विस्तार है। गद्यगीतों के प्रचलित विषयों में से राष्ट्रीय, ऐतिहासिक एवं शोकमूलक विषयों के अतिरिक्त प्रेम सम्बन्धी भक्तिपरक, रहस्यवादी, दार्शनिक और कृतिमूलक आदि अनेक प्रकार के गद्यगीतों की रचना उन्होंने की हैं जिससे उनके गद्यगीतों के आधार में विस्तार एवं गाम्भीर्य - दोनों का समावेश हो गया है।

1·3·2 श्रीमती दिनेश नंदिनी का पद्य :-

दिनेश नंदिनी डालमिया की रचनाओं में छायावादी भावों का एक सहज प्रवाह हैं। उनके "उरवाती", "मनुहार", "सारंग" कविता संग्रहों में यद्यपि व्यक्तिगत प्रणय सम्बन्धी भावनाओं का समावेश है, किन्तु कवयित्री लौकिक भावों के साथ उडान भरती हुई अलौकिक भूमि को अनायास ही स्पर्श कर लेती है। उनके पद्यगीतों में गद्यगीतों की ही तरह भावों का प्राधान्य है, और वे सामायिक समस्याओं और विवादों के झमेले में न पडकर केवल अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति में ही निरत रहती है। इस तरह उनके गीतों का धरातल भावों पर स्थित होने के कारण वह अध्यात्मिक भावना रसवाहिनी बनकर हृदय को छूती है और यही नंदिनीजी की कविताओं का सौन्दर्य हैं।

उनके कुछ गीतों का साहित्यिक विश्लेषण इसतरह हैं :

कवयित्री में असीम दुःख सहने की क्षमता है। वह जलते हुए दीपक की तरह जीवन से भागने का यत्न नही करती, उसी से अपना स्नेह सम्बन्ध स्थापित करती हैं -

"दम घुटता है, घबराहट होती है, किसके पैरों की आहट हैं।
जगती से रूठे जीवन पर बरबस नेह छलकता है।।
तिल-तिल दीपक जलता हैं।"

उनका वियोग रूला-रूला कर जीवन को मृत्यु का अनुभव करानेवाला नहीं है। वह साधारण प्रेमियों का - सा विलाप, प्रलाप उत्पन्न करनेवाला नही

है। उनके जीवन में वह प्रलाप इतना रम गया है कि, अग वहीं उनके जीवन का सुहाग-प्रदीप बन गया है -

उन्हें जब यह विश्वास हो जाता है कि चिरविदाई और चिर-वियोग ही जीवन का चिर-सत्य है, और मिलन केवल भ्रान्ति है तो उनके मोह का समस्त आधार टूट जाता है और वे अपने को पीडायुक्त अनुभव करती है यही पीडा उनके काव्य पंक्तियों में प्रकट होती है।

"आज प्रिय स्वच्छन्द हूं मैं, मोह का टूटा सहारा।
आज पीडामुक्त हूं मैं, आज उन्नत पथ हमारा ।
अब न होगी जय पराजय, तुम्ही पथ हो प्राप जागें।
आज मेरे भाग जागें।"

जीवन में चिर-सुख और चिर-यौवन एक विडंबना हैं। यहां परवशता और विफलता ही मनुष्य का वरदान है। जो जग की मधुरिमा को स्थिर और सुख स्वप्नों को सत्य मानकर अपनी आसक्ति बढ़ाता चलता है वह जीवन से कभी मुक्ति नहीं पा सकता। इसलिए कवयित्री दिनेश नंदिनी ने अपने कविता में सुख के विफल सपनों को सिसकते हुए छोड़कर लौट जाने का आग्रह किया हे -

"घर लौट जाउंगी ।
लोचनो मे वारिधी भर, कंठ में ही बंधते स्वर
सुख के विफल सपनें सिसकते छोड जाउंगी ।
मेरे दुःख की निश्चल काया,
मृदुल कल्पना जाल विछाया,
अस्थिर यौवन, स्थिर मधुरिका सौप जाउंगी।"

जीवन के महाप्रयाप के लिए कवयित्री ने जो मॉगलिक भावना व्यक्त की है, वह अपूर्व है। जीवन के प्रति अनिच्छा अथवा वैराग्य और मृत्यु से प्रेम तो कई कवियों ने व्यक्त किया है, परन्तु "मनुहार" के काव्य में दिनेश नंदिनीजी का जीवन प्रस्थान अत्यन्त कलात्मक और मधुर हैं -

"प्राण चले उस पार ।
क्षिति अधरोंपर पुष्प बीछे है, उर तन्त्री के तार खिंचे है।
विवश आज अनजान बटोही मान - भरी मनुहार।"

"मनुहार" के प्रथम गीत में ही कवयित्रीजी की काव्य चेतना सौन्दर्य की पराकाष्ठा तक पहुंच गई है। समस्त गीत की प्रकृति मधुर प्रवाहमय और लयपूर्ण है। मीरा के गीतों में जिस प्रकार लौकिकता के आभास के साथ गम्भीर आध्यात्मिकता है, उसी तरह यह गीत और इस शैली के अन्य गीत भी आध्यात्मिक धरातल पर स्थित है। स्वरों की मधुरिमा पर मुग्ध होनेवाले प्राणी की अवस्था इन पंक्तियों में वर्णित है -

"तुम गाओ, निस्पन्द सुनुं मैं ।
कानों मे अमृत भर जाये, शब्द कंठ में ही रूंध जाये,
रोम रंध्र में गीत समाये, आंसू आंखो मे जम जाये।
चुपके से ही भाव चुनुं मैं।
तुम गाओ निस्पन्द सुनुं मैं।"[14]

"सारंग" के काव्य में कवयित्री के हृदय में एक अनिर्वचनीय करूण पलती हुई दृष्टिगत होती है। वह स्वयं को शयन की ऐसी आरती तथा भारती के रूप में निहारती है, जिसके प्रत्येक आँसू में "रात" पिघल कर उसके जीवन से मिलती चली जा रही है। अपने प्राणों में तूफान लिए प्रियतम के सुखों की वाहिका बुनी हुई है ।

मै शयन की आरती हूँ
"शस्य" श्यामल भारती हूँ
रात आँसू में पिघलकर आज मुझसे मिल रही हैं
प्राण में तूफान है पर पिय सुखों की सारथी हूँ।"

दिनेश नंदिनी ने प्रणय की पिपासा को पीकर जैसे-तैसे अपने जीवित रहने की कहानी दुहराई है। वह अपने भौतिक शरीर रूपी कारागार में अपने आत्मिक बन्धन से विव्हल हो उठती है। अतः जिस प्रेम को वह सत्य समझीं थी, उसी

"भाव" का जब चाँदी के टुकडो द्वारा विनिमय देखती है तो उनका हृदय चीख उठता है और प्रिय से कुछ उपालम्भ करने लगता है -

"मुझसे पहले ही कहते यह प्यार नहीं सपना है
चाँदी के टुकडों का विनिमय कौन यहाँ अपना है?"[15]

इस तरह "हिरण्यगर्भा" दिनेश नंदिनी का नया प्रकाशित कविता संग्रह है। जो सशक्त, भावपूर्ण, जीवन्त कविताओं का पुष्पगुच्छ है, जिसमें उनके "सुमन" के अनेक भाव खिले है, जो अपनी सुगंध से सुवासित है। भावों के साथ सम्बन्ध मनःस्थितियाँ है जो उनके उद्रेक की आधारभूत भूमि है।

"अक्षांक्ष रेखा", "आंचल में गूंजती हवा", "विषाद गीत", "परछाइयों का शहर" आदि अधिकांश कविताओ में उनके अतीत के स्मृति-बिम्ब दिखायी देते है। तथा अन्य कविता में कवयित्री दिनेश नंदिनी ने अपने व्यक्तिगत जीवन के विविध आयाम प्रस्तुत किये है। इस प्रकार उनका "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह एक सृजन का सत्य है जिसमें उनकी मर्मान्तक पीडा प्रकट हुई है।

दिनेश नंदिनी प्रमुखतः प्रणय परक भावना की कवयित्री है, किन्तु उनकी कल्पना लौकिक धरातल से चलकर आध्यात्मिक भूमि को सहज ही स्पर्श कर लेती है। उनके काव्य में एक ओर तो दार्शनिक प्रवृत्ति का सहज आगमन है, तथा दूसरी ओर सहज अभिव्यक्ति के साथ सूक्ष्म दृष्टि से सम्पन्न चित्रात्मकता की प्रवृत्ति। एक विशेष बात यह भी है कि कवयित्री ने अपनी सहज भावना के अनुरूप भिन्न भिन्न भाव-परक चित्र अवश्य प्रस्तुत किये है, किन्तु भाषा की सहजता और सरलता एवं स्वाभाविक रूप से आये हुए मानवीकरण का आगमन उनके काव्य को कृत्रिमता से हटाकर स्वाभाविकता के धरातल पर प्रतिष्ठित कर देता हैं।

1·3·3 <u>उपन्यास कला : दिनेश नंदिनी डालमिया</u> :-

बहुमुखी प्रतिभा संपन्न दिनेश नंदिनी मुख्यतः कवयित्री होने के साथ - साथ हिन्दी साहित्य जगत् मे एक उपन्यासकार के रूप में भी पहचानी जाती है। प्रायः उनके सभी उपन्यास आत्मकथात्मक है, जिनमें "नारीमन का अन्तर्द्वन्द"

तो प्रमुख है और उसके साथ एक विशेष वर्ग के जीवन-परिवेश का भी अत्यन्त प्रामाणिक और प्रभावी चित्रण किया गया है।

दिनेश नंदिनी ने छं उपन्यास लिखे है, इनमें "मुझे माफ करना", "कंदील का धुआ", "आहों की बैसाखियां", तथा "और सूरज डूब गया", यह आत्मकथात्मक औपन्यासिक कृतियां है। और "फूल का दर्द" सन् 1985 में प्रकाशित दिनेश नंदिनी का पांचवां उपन्यास है जिसमें एक प्रतयक्ष घटना है जिसे संस्मरण भी कहा जा सकता है। इस तरह "आंखमिचौली" उनके उपन्यासों की श्रृंखला की विशिष्ट कडी है। प्रथम चारों उपन्यासों में लेखिका ने अपने और अपने पति के जीवन की घटनाओं को कालक्रम से प्रस्तुत किया है। इस सम्बन्ध में स्वयं लेखिका का वक्तव्य है, "ये चारों कथा कृतियां एक दूसरे से स्वतंत्र होते हुए भी अंतर में जुडी हुई हैं। बदले हुए नाम होते हुए भी इन सब में एक ही नायक का चरित्र है।"[16]

1· मुझे माफ करना :-

यह उपन्यास तीन खण्डों में विभक्त हैं - 1· आशंकाओं के द्विप। 2· आवर्तों के बीच। 3· नये क्षितिजों की ओर।[17] इस उपन्यास में कथा नायिका की अनेक विडम्बनाएं है - उदाहरणार्थ - "वे विश्व को एक राज्य, एक छत्र, एक तन्त्र, एक भाषा का पाठ पढ़ाते हैं, अनदेखे ही बडें-बडे कारखानों का निर्माण करते हैं, कई परिवारों का पोषण करते हैं - परन्त उनके अपने घर में ही कितनी भाषाएं कितने विभिन्न नीति-तत्व अपनों में ही कितने अलगाव। उनके व्यक्तित्व के ऐसे कई पेचीदा पहलू थे जिनके अर्थ और अभिप्राय निकट रहनेवाले भी समझ नहीं सकते थें, क्योंकि वे सब एक दूसरें में उलझे हुए और अस्पष्ट थे।"[18] वह अपनी आयुसे अधिक आयु के व्यक्ति से अन्तर्जातीय विवाह करती है, यह विवाह भी गुप्त होता है और वह अपने पति की छठी पत्नी हैं। उपन्यास में कथा नायिका ने विवाह का प्रस्ताव, गुप्त विवाह, नन्द एवं माससे भेट तथा विवाह का प्रकटीकरण, गर्भपात की घटना, पुनः पुत्री का जन्म, विदेश यात्रा तथा जलियाना का प्रसंग आदि अनेक मार्मिक घटनाओं को हृदयस्पर्शी रूप में प्रस्तुत किया हैं।

इन घटनाओं के बीच कथा-नायिका ने अपने तथा अपने पति के चरित्र का अंकन किया है तथा अपने अहं एवं आगत को सहज रूप से स्वीकार न करने की दुर्बलता को भी ईमानदारी से स्वीकार किया है। इस प्रकार यह उपन्यास विडम्बनाओं की कहानी है और एक ऐसी स्त्री की मार्मिक कहानी हे, जो पत्नी बनती है और मां भी बनती है, परन्तु वह पत्नी और मां का वास्तविक सुख प्राप्त नहीं कर सकतीं। ..... इस तरह इस उपन्यास में स्वयं लेखिका ने अपने व्यक्तित्व तथा उनके पति साहित्य प्रेमी उद्योगपति के अंतरंग जीवनक्षण और उसकी साधारण काया में समाहित विराट व्यक्तित्व के अनुभवों का चित्रण किया है।

अतः स्पष्ट है कि "मुझे माफ करना" में लेखिका की आत्मकथा के अंश "यत्र-तत्र-सर्वत्र" बिखरे पडें है।

2· <u>आहों की बैसाखियाँ</u> :-

दिनेश नंदिनी के दूसरें उपन्यास "आहों की बैसाखियाँ" की कथा पहले उपन्यास के कथा अन्त से ही आरम्भ होती है, पर इसमें पात्रों के नाम बदल गए हैं। "मुझे माफ करना" उपन्यास कथा नायक की गिरफतारी की आशंका से समाप्त होता है और "आहों की बैसाखियां" कथा नायक द्वारा वर्षों जेल की सजा काटकर लौटने से होता है। इस उपन्यास की नायिका "इरा" का व्यक्तित्व पहले उपन्यास की नायिका जैसा ही है, पति एवं परिवेश से उसके सम्बन्ध वैसे ही है, उसके चरित्र को लेकर फैलाई गई अफवाहें उसी प्रकार की हैं। इस उपन्यास में "इरा" पर पति "गोकुलचन्द्र" को भोजन में विष मिलाकर मार देने का आरोप लगाया जाता है और यह निस्सहाय बनी रहती है। इस उपन्यास में माया का प्रसंग कथा को एक नया मोड देता है और बडे घरों के अन्दर होने वाले कुचक्रों का पर्दाफाश करता है।

माया अपने जाल में अनेक व्यक्तियों को पंसाती है और सभी उसके कुचक्र में फंसते जाते है। माया इस बात का प्रतिक है कि धनी वर्ग के परिवारों में, उनके सदस्यों में परस्पर कैसा सन्देह, घृणा, शत्रुता पनपती है और किस प्रकार

एक अनजान स्त्री पूरें परिवार को तोड़ देती है। लीला, मलहोत्रा, गिरिजा, दिलीप, सरला आदि पात्र कथा का विकास करते हैं। परन्त "इरा" की मौन-व्यथा उपन्यास में सर्वत्र व्याप्त हैं। एक पत्नी के रूप में उसका जीवन अपमानित, उपेक्षा पूर्ण एवं निराधार बन गया हे। जब उसका पति ही उसे चरित्रहीन मान लेता है, तब "इरा" कैसे अपने बच्चों को पालती है तथा उन्हें किस प्रकार संस्कार देती है तथा किस प्रकार बच्चों के प्रश्नों का उत्तर देती, यह उसके कृत संकल्पी चरित्र की द्योतक हैं। वह अपने परिवार के दायित्व को निभाती है, और अपनी लेखनी के दायित्व को भी, जो उसे माता-पिता के घर में मिला था। वह अब निर्द्वन्द्व होकर इस संसार के दायित्वों को पूरा करने के लिए तैयार हैं। यह उसकी विजय है, उसके चरित्र का एक नया विकास हैं, नारी को एक नयी शक्ति एवं दृढता देने का संकल्प हैं।

3· <u>कंदील का धुआँ :-</u>

इस उपन्यास में लेखिका ने स्पष्ट कहा है, "मेरे चिंतन का विषय केवल वहीं नर है जो नारायण बनने की कोशिश में मानवीय स्वभाव से हटकर अपने में एक चुनौती और रहस्यात्मकता भर देता है।"[19] उसी नर के व्यक्तित्व एवं चरित्र को उकेरने एवं विश्लेषित करने के प्रयत्न में लेखिका ने जीवन की घटनाओं तथा पात्रों की सृष्टि की है। इस उपन्यास का नायक अनेक गुणों तथा मानवीय दुर्बलताओं से परिचित हैं। कई संतानों का पिता और अनेक स्त्रियों का भर्ता नायक अपने परिश्रम, दृढ-संकल्प शक्ति, प्रतिभा और सूझबूझ से जहां एक ओर अनेक मारवाड़ी उद्यमियों की तरह सामान्य व्यक्ति से उठकर भारत के गिने-चुने उद्योगपतियों में अपना स्थान बनाता हैं, धन, यश और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है, वहां दूसरी ओर अपनी चारित्रिक दुर्बलताओं और अपने स्वप्निल आदर्शो के कारण न केवल स्वयं को अपितु अपने बड़े परिवार को भी संकट में डालता है।

4· <u>और सूरज डूब गया :-</u>

यह उपन्यास चार सम्बध्द उपन्यासों की श्रृंखला में अन्तिम उपन्यास है। अन्तिम होने की यही परिणति सूरज डूबने की व्यंजक बन जाती है। इन चारों

उपन्यासों में अनेक नामों और कामों के बीच जीने वाले, अनेक व्यक्तित्वों के एक व्यक्तित्व वाले जिस "असाधारण" व्यक्ति को "पहचानने की कोशिश" की गई हे, उसी की "साधारण मौत" सूरज डूबने की प्रतीक मानी गई है।

इस उपन्यास की कथा वास्तविक जीवन से उठायी गयी हैं। इसमें घटनाक्रम वाला कथानक नहीं है। एक पुरातत्ववेत्ता के कौशल से घटनाओं को परत-दर-परत कुरेद कर उजागर किया गया हैं। इस तरह कथा सूत्र विगत कालीन श्रेष्ठ वर्ग में प्रचलित बहुपत्नी प्रथा और उससे उत्पन्न अनमेल विवाह के चिरपरिचित खूंटे से बंधा है। अनमेल विवाह तो ऐसा कि जिसमें दूल्हे की उम्र वधू के पिता से भी बडी होती है। बहुपत्नी प्रथा "सौतिया डाह" और संपत्ति के बंटवारे की समस्याओं को जन्म देने वाली होती है। इस उपन्यास में ये दोनों की समस्याएं प्रधान है।

इस तरह चारों उपन्यासों की कथा - श्रृंखला का केंद्रीय पात्र एक ही व्यक्ति बताया गया है। "और सूरज डूब गया" इस उपन्यास को पढ़ने से भी यहीं प्रतीत होता है कि चारो उपन्यासों में "आत्मकथात्मक" शैली अपनायी हैं, और इसमें केंद्रीय पात्र एक ही व्यक्ति बताया गया है।

5. <u>फूल का दर्द</u> :-

"फूल का दर्द" श्रीमती डालमिया का पांचवां उपन्यास है। इसमें भी लेखिका ने "मैं" शैली अपनायी हैं, इसमें उनके जीवन की घटना-पति के दोष, उन पर चले मुकदमे तथा तनावपूर्ण पारिवारिक सम्बन्धों की चर्चा हैं। और उनकी सृजनशीलता, दूसरों की सहायता को कर्तव्य मानकर उसके लिए निजी जीवन को विषादपूर्ण बनाने की तत्परता, संवेदनशीलता नारी के प्रति अदम्य करूणाएवं सहृदयता, खतरों से टक्कर लेने का साहस, प्राचीन रूढियों, परम्पराओं और जीवनमूल्यों का विरोध करने की शक्ति आदि बातों का परिचय उनके इस उपन्यास में मिलता हैं, तथापि यह आत्मकथात्मक औपन्याकि कृति न होकर सामाजिक उपन्यास है। यह लेखिका जीवन-वृत्त न होकर उपन्यास की नायिका अनन्ता की कहानी है जिसमें जीवन का सत्य भी है, स्वयं देखें हुये घटनाओं का संस्मरणात्मक शैली में विवरण भी हैं।

मूलतः यह एक रूपगर्विता, स्वच्छन्द नारी की कहानी है जो पुरूष का शासन स्वीकार करना जानती ही नहीं, पर जिसकी राजरानी बनकर ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीने की आकांक्षा उसे विपदाओं में डाल देती है, जो गगन विहारी पक्षी को स्वर्ण पिंजरे में बन्दी बना देती है और अपनी चातुरी और बुध्दि कौशल से उस पिंजडे से निकल भागती है। अनन्ता के माध्यम से राजमहलों या धनाढय पूंजीपतियों उद्योगपतियों की बडी एवं विशाल खेलियों से जीवित लाश की तरह जिन्दगी गुजारनेवाली नारियों की दयनीय स्थिति का चित्रण इस उपन्यास में लेखिका ने किया है जिनकी भूमिका मां-बहिन, पत्नी, मित्र, सलाहकार की न रहकर केवल रंगी-रंगाई, सजी-सजाई गुडियों की रह गई है। इस तरह इस उपन्यास में लेखिका ने बाहय जीवन, परिवेश और सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर भी अधिक ध्यान केंन्द्रित किया है।[20]

6. <u>आँख मिचौली :-</u>

"आँख मिचौली" एक असामान्य उपन्यास है, क्योंकि वह एक असामान्य युवती की महागाथा है, रेणु नामक ऐसी युवती की जो असाधारण जीवन जीना चाहती हैं। लेकिन रेणु के पिता रेणु को उच्च शिक्षा दिलाकर सामान्य नारी के कठघरे से निकाल देना चाहते है और यही भावना बीज रूप में रेणू के मन में जमती है। वह इसे साकार कर देना चाहती है।

रेणु षोडषी ही थी, उसने अपने पिता जैसे आयुवाले समाजसेवी बैरिस्टर मेहता से विवाह करने का संकल्प किया है। उसकी दृष्टि में मेहता महान पुरूष थे, उनके गुणों पर ही वह टीकी थी। परन्तु उनके द्वारा रेणु को अस्वीकृति मिली, जिसकी उसने कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी। मेहता जी से अस्वीकृत हो जाने पर रेणु के मन में एक द्वन्द्व छिड जाता है। रेणु के जीवन में सुन्दर, सुशिक्षित और गुणवान पुरूष आए जो उसे पत्नी के रूप में पाने के आकांक्षी थे। किन्तु रेणुने एक सामान्य नारी की भाँति किसी को नहीं अपनाया उसका अपना एक चिंतन था, ध्येय था, सुनिश्चित लक्ष्य था। जिसे वह पाना ही अपनी जीवन यात्रा का अन्तिम पडाव मानती थी।

रेणु दो ध्रुवों के बीच आंखमिचौली खेलती रही है - एक ओर संस्कार, नैतिकता, और पारिवारिक मर्यादाएं जो अपनी-अपनी जगह अटल थे और दूसरी ओर शोषित, पीडित नारी की मुक्ति की छटपटाहट। अंततः वह इस द्वन्द से स्वयं अपना मार्ग चुनना चाहती है। और घर छोडने का फैसला कर देती है। और रेणु के इस निश्चय के उपरान्त ही कथा समाप्त हो जाती है।

इस उपन्यास में रेणू का प्रभावी चरित्र सम्पूर्ण "वस्तु" तथा पात्रों पर इतना छाया है कि अन्य चरित्र धूमिल से पड गयें है। इस तरह दिनेश नंदिनी ने रेणु का ऐसा असाधारण रूप खींचा है कि पूरा उपन्यास एक स्त्री का त्रासद इतिहास बन गया हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि दिनेश नंदिनी के उपन्यासो में आदर्श प्रेम, शालीन और संयमित लेखनी के द्वारा अंकित कडवे मीठे जीवन की रंगारंग छबियां, भोगे गए जीवन की करूणा, नारी-जीवन की विवशता एवं उसके द्वन्दग्रस्त हृदय की अन्तरंग झांकी दिखायी देती है। और गद्यगीतों जैसी काव्यमय भाषा, अनुभूति में डूबी नारी - मन के विविध करूण चित्र उनके उपन्यासों की अपनी एक विशेषता है।

1·4 मूल्यांकन :-

आधुनिक हिन्दी साहित्य की बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यिका श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमिया का व्यक्तित्व एवं कृतित्व महान है। दिनेश नंदिनी नारी सुलभ कोमल अनुभूति और सरस काव्यमयी अभिव्यक्ति के द्वारा अपनी अलग पहचान बनाती है। उनका बचपन अभावों में बीता है, और इसी परिस्थिति का सामना करते हुए शिक्षा आदि से अपने जीवन को सम्पन्न किया। उनके व्यक्तित्व में सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना हैं - सेठ जी से उनका विवाह। वस्तुतः दोनों के जीवन-मूल्यों में इतना अन्तर था कि कुछ वर्षो के बाद ही इनमें दूरी आ गई, उनका यह वैवाहिक जीवन विवाह-पूर्व जीवन से एकदम विपरीत था। पहले के जीवन में स्वच्छन्दता अधिक थी और वैभव कम था। विवाह के बाद वैभव अधिक था और स्वच्छन्दता

कम। विवाह के बाद प्रेम की प्राप्ति में असफल रहने के कारण ही - उनकी यह निराशा और अतृप्त प्रेम की भावना ही उनकी सतत साहित्य - साधना का मूल है और उसमें सर्वत्र परिव्याप्त भी। इस तरह नाटक जैसे अपवाद को छोडकर उनकी लेखनी ने साहित्य के सभी क्षेत्रों मे अपना अधिकार जमाया। साहित्य के सभी क्षेत्रों में लगन और निष्ठा से अपना एक अलग अस्तित्व निर्माण किया। अतः स्पष्ट है कि उच्च कोटि की सर्जनात्मक प्रतिभा के कारण समकालीन हिन्दी साहित्यकारों में श्रीमती दिनेश नंदिनी अपनी अलग पहचान बनाती हैं।

संदर्भ सूची

1· दिनेश नंदिनी डालमिया - सम्पादक अर्चना चतुर्वेदी, "कृतित्व के विविध आयाम" पृ· 16·

2· वही, पृ· 16

3· वही, पृ· 16

4· वही, पृ· 17

5· वही, पृ· 22

6· साहित्यिक निबंध - राजनाथ वर्मा , पृ· 255

7· दिनेश नंदिनी डालमिया - सम्पादक अर्चना चतुर्वेदी "कृतित्व के विविध आयाम", पृ· 18

8· वही, पृ· 30

9· वही, पृ· 42

10· वही, पृ· 44

11· वही, पृ· 44

12· वही, पृ· 58

13· वही, पृ· 64

14· वही, पृ· 121, 122

15· आधुनिक कवि और उनका काव्य - डॉ·दयानन्द शर्मा "मधुर" पृ·168,169

16· दिनेश नंदिनी डालमिया - सम्पादक अर्चना चतुर्वेदी - "कृतित्व के विविध आयाम", पृ· 126

17· मुझे माफ करना - दिनेश नंदिनी डालमिया ,

18· वही, पृ· 165

19· दिनेश नंदिनी डालमिया - सम्पादक अर्चना चतुर्वेदी - "कृतित्व के विविध आयाम", पृ· 129

20· वही, पृ· 143